QAWWALI

Haji Aslam Sabri, Qawwali
(Saharanpur)

कव्वाली

In the history of Hindustani music, one of the most outstanding names will always be that of Hazrat Amir Khusrau whose spectacular contributions to our music are recalled again and again to this day. Born in Patiali (in the Etah District of U.P) in 1253 A.D. of a Turkish father and Indian mother, his love for India and his passion for Hindustani music were unparallelled, and so were his various contributions to Hindustani music. Besides sowing a few seeds for "Khayals", re-naming some musical instruments, and creating new ragas, he enriched Hindustani music with new types like Taranas, Ghazals and Qawwalis,. Though a great deal of his time was spent as a favourite Court-poet under several Sultans, "he mixed with kings and commoners, Sufis and soldiers, poets, scholars and musicians, drank deeply of life, and gave of his best in fascinating abundance" (Jaffar Abbas). But the real epicentre of his life was not the royal Court, but the *KHANQAH*, the seat of Hazrat Nizamuddin Auliya, the famous mystic saint of the Chisthi Order, and the beloved spiritual preceptor of Khusrau. While political intrigues, social injustice and scrambles for power, raged all around, thousands found tranquility in the classless *"KHANQAHS"* rallying around the great Saint--"the emperor without a throne or a crown", but one who ruled over the hearts of the masses with his love and compassion. The SUFI mystics have always used Music as "one of the most powerful means of ascent on the spiritual path", which helps to lift man from the material world of suffering and pain to "the limitless world of the spirit where pain and suffering transform into joy & ecstacy". Khusrau was deeply impressed by the Keertans and Bhajans sung in and around the temples of India and the great *bhakti* movement that possessed the whole country.. Drawing inspiration from these Keertans, from the Arabic *QAUL,* and from Persian mystic poetry (which he had studied deeply), he added musical elements and gave these Ghazals and Qawwalis a passionately musical as well as spiritual form with the potentials for religious ecstacy. He blended Persian, Urdu, Hindi, Brajbhasha, and even folk elements and rhythms into the texts and made them great favourites with Muslims and Hindus alike.

QAWWALI or *"MEHFIL-E-SAMA"*, the gathering of devotees is a form of devotional singing which has enjoyed immense popularity all over North India and Pakistan since its origins in the 2nd half of the 13th century, thanks to the many-splendoured genius of Hazrat Amir Khusrau. Rooted in the SUFI traditions of music, the best Qawwalis can be heard at the shrines of great Sufi Saints. Composed in a blend of various languages and dialects, it beautifully synthesises many cultures, and the subject of the Qawwalis is impassioned mystical love for the Creator (or Prophet) or in praise of Sufi saints. Sung in Chorus as they are, the leader has to be an accomplished vocalist with years of excellent training in classical music, and deep knowledge of raga-raginis and the inner meanings of the texts. Based on raga-raginis, the renderings of Qawwalis are marked by various features of the medium tempo khayals such as *alaps, bol-alaps, bol-bant* of phrases, in various exciting rhythmic combinations, and *bol taans*-- all of which give the Qawwali a rich classical flavour. The supporting vocalists have to be equally well-trained to keep up the inspired mood of the leader. Harmonium, Dholak, Tabla-bayan, electric banjo, and clapping of hands are the usual accompaniments. There is great scope for improvisation. The Sabri Brothers of Pakistan, Aslam Sabiri & Party from Saharanpur, Jaffar Hussain and Party from Badaur are some of the outstanding Qawwali parties on the contemporary scene. All professional Qawwals trace their traditions to Amir Khusrau, their master, and creater of this great form.

The great Persian mystic Jalal-ud-din RUMI said:- "SAMA is the Soul's adornment which helps to discover love, to feel the shudder of the encounter, to take off the veil, and to be in the presence of God".

Susheela Misra

Picture by : **Rakesh Sinha**

Haji Aslam Sabri, Qawwali
(Saharanpur)

कव्वाली

हिन्दुस्तानी संगीत के इतिहास में सूर्य की तरह चमकने वाला नाम है— ''हजरत अमीर खुसरो'', जिन्होंने हमारे संगीत के लिए कई परतों और दिशाओं में योगदान दिया है। उत्तर प्रदेश के एटा जनपद के गांव पटियाली में १२५३ में जन्मे हज़रत अमीर खुसरों के पिता तुर्क थे और मां हिन्दुस्तानी। अमीर खुसरो के मन में भारतभूमि के लिए अथाह प्रेम था। हिन्दुस्तानी संगीत से उनका इश्क लगभग अद्वितीय था, इसलिए हिन्दुस्तानी संगीत के लिए उनका योगदान भी अद्वितीय रहा। उन्होंने ख़्याल गायकी के कुछ बीज बोये, संगीत के साज़ों को नये नाम दिये, नये राग रचे। इन सबके साथ तराना, गज़ल और कव्वाली शैलियां देकर अमीर खुसरो ने हिन्दुस्तानी संगीत को मालामाल कर दिया। यूँ तो उनका अधिकतर समय कई सुल्तानों और बादशाहों के दरबार में बीता तब भी ''वे शाहों और जन—साधारण से, सूफियों और सिपाहियों से, विद्वानों और, संगीतकारों से ऐसे गहरे स्तर पर मिले कि उन्होंने यहां का जीवन—रस जी भरके पीया, जो उन्होंने अपने बहुमुखी बहुमूल्य योगदान के रूप में लौटाया। वह योगदान सुन्दर और असीम है''। (जाफ़र अब्बास)

अमीर खुसरो के मन का केन्द्र शाही दरबार में नहीं था। उनका मन तो उस ''खानकाह'' में था, जहां चिश्तिय सिलसिले के सुविख्यात सूफी सन्त हज़रत निंज़ामुद्दीन औलिया रहते थे— वही अमीर खुसरो के पीर—ओ—मुरशद थे। एक तरफ राजनीतिक षडयंत्रों, सामाजिक अन्याय और सत्ता के लिए छीना—झपटी का ज़ोर था। दूसरी ओर, हज़ारों लोगों को उस ''खानकाह'' में सुकून और शान्ति मिलती थी। वे वहां उस महान संत के चरणों में पनाह पाते थे जो बिना ताज—तख़्त का बादशाह था, लेकिन जिसके प्यार और करुणा का साम्राज्य जन—जन के दिलों पर फैला था। सूफी संतों ने सदा संगीत को अध्यात्मिक उड़ान का एक शक्तिशाली माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया, क्योंकि संगीत मानव को संसार के भौतिक बन्धनों की पीड़ा और दुख की दलदल से उठाकर आत्म के अनंत विशाल आकाश तक ले जाता है, जहां पीड़ा और दुख मिट जाते हैं और उनकी जगह उभर आता है ''सुख और आनन्द''। खुसरो के मन पर गहरा प्रभाव था कीर्तन और भजन गायन का, जो भारत के कोने—कोने में मंदिरों और खुले प्रांगणों में गूँजा करता था। इसी भक्ति—संगीत से प्रेरित होकर अरबी भाषा से 'कौल'' को अपनाकर और फ़ारसी सूफ़ी काव्य के गहरे अध्ययन को उसमें समाकर, अमीर खुसरो ने संगीत का एक नया रूप संवारा और गज़ल और कव्वाली की नई शैलियों की रचना की, जिनमें संगीत का दिव्य—रस तो है ही, साथ में अध्यात्मिक आनन्द के आयाम भी हैं। अमीर खुसरो ने फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, ब्रजभाषा और लोक भाषाओं के सुन्दर शब्दों को समेटा, उन्हें स्वर और ताल की धड़कनें दीं जिन पर देश के हिन्दुओं और मुसलमानों सबका प्यार और श्रद्धा थी।

तेरहवीं सदी की शाम ढलते–ढलते पूरे उत्तर भारत में और आजकल के पाकिस्तान में भी कव्वाली अर्थात 'महफ़िले–समा'' में रसिक भक्तों के समूह झूम–झूमकर भक्ति–संगीत की इस शैली को सुनते थे। पूरे क्षेत्र पर छा गया था इसका जादू। सूफ़ी संगीत में रची–बसी बेहतरीन कव्वालियां सूफ़ी–संतों की दरगाहों पर ही सुनी जा सकती हैं। इन कव्वालियों में न केवल अलग–अलग भाषाओं और बोलियों का समिश्रण है, इनमें सुन्दर संगम है सांस्कृतिक रंगों का। कव्वालियों में उमड़ता है अल्लाह (या रसूल) या सूफ़ी–संतों प्रति अगाध श्रद्धा का भाव।

कव्वाली समूह–गान के रूप में गाई जाती है, जिसमे मुख्य स्वर उस गायक का होता है जिसने शास्त्रीय संगीत का उत्कृष्ट प्रशिक्षण लिया हो, जिसे राग–रागनियों की गहरी समझ हो और जो शब्दों की आत्मा को पहचानता हो। राग–रागनियों की बंधी कव्वालियों में ''मध्य–लय ख़्याल'' के गुण होते हैं जैसे आलाप, बोल आलाप और बोल–बांट। इन सबके साथ बोल–तानों और ताल के थिरकते समिश्रण से कव्वाली को सुन्दर और समृद्ध शास्त्रीय रंग–रूप मिलता है। कव्वाली में संगत की आवाजों का भी काफी प्रशिक्षित होना अनिवार्य है, तभी तो वे आवाजें मुख्य–स्वर के बनाये माहौल को निभा पायेंगी। कव्वाली में संगत के लिये हारमोनियम, ढोलक, तबला–बायां, इलेक्ट्रिक बैजों और तालियों की ताल आवश्यक है। कव्वाली–प्रदर्शन में गाते समय विकास, विस्तार के बहुत से अवसर मिलते हैं।

पाकिस्तान के साबरी बन्धु, सहारनपुर के असलम साबरी व साथी, और बदायूँ के जाफर हुसैन व साथी आजकल प्रमुख कव्वाली–गायक है। बीते बरसों में हैदराबाद के अज़ीज़ अहमद वारसी और साथियों का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा हैं। लगभग सभी जाने–माने कव्वाल अपनी परम्परा की डोर हज़रत अमीर खुसरो के नाम के साथ बांधते हैं, क्योंकि वही इस शैली के जन्मदाता थे।

महान फ़ारसी सूफ़ी सन्त जलालुद्दीन रूमी ने कहा है– **समा रूह** का गहना है, जिसकी चमक से इश्क की पहचान, महबूब का सामना होने पर कंपन का एहसास, नक़ाब उलटने की प्रेरणा और मालिके–दो–जहाँ के हुज़ूर में हाज़िरी का अहसास मिलता है।

सुशीला मिश्रा

छाया चित्र : **राकेश सिन्हा**
हिन्दी अनुवाद : **के.के. नैयर**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष-386389 द्वारा मुद्रित ।